अज़हर उस्मान

कॉमेडी का नया अंदाज़

अंजुम नईम

भारतीय अमेरिकी स्टैंड अप कॉमेडियन अज़हर उस्मान ने भारत के अपने पहले दौरे में प्रस्तुत कार्यक्रमों से यह बताया कि मुस्लिम भी अन्य लोगों की तरह ही हंसते हैं।

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए अज़हर उस्मान।

फोटोग्राफ: नीरज बोहरा

''मैं महज़ चुटकुले नहीं सुना रहा- मैं हंसी-मज़ाक को हथियार बनाकर शांति छेड़ रहा हूं, मुसलमानों के बारे में समझदारी बढ़ा रहा हूं,'' कहना है नवंबर में भारत के दौरे पर आए भारतीय-अमेरिकी स्टैंड-अप कॉमेडियन अज़हर उस्मान का।

नई दिल्ली, अलीगढ़, पुणे और मुंबई के श्रोता और दर्शक शिकागो के इस बाशिन्दे के चुटकुलों पर हंस-हंसकर दोहरे हो गए। 32 वर्षीय कलाकार की फुलझड़ियों ने किसी को नहीं बख्शा- न अपने परिवार को, न रिश्तेदारों-दोस्तों-अमेरिकी समाज को, यहां तक कि खुद को भी नहीं।

नई दिल्ली में अमेरिकन सेंटर में अपने कार्यक्रम से अपनी मनोरंजन शृंखला की शुरुआत करने वाले उस्मान ''अल्लाह मेड मी फ़नी'' नाम के मुस्लिम कॉमेडियनों के समूह का हिस्सा हैं। बिहार से अमेरिका गए माता-पिता की संतान उस्मान ने अपने कामकाजी जीवन की शुरूआत कॉरपोरेट अटॉर्नी के तौर पर की थी। तो फिर पेशा क्यों बदला? जवाब में वह बताते हैं, ''क्योंकि मैं बेआवाज़ लोगों को आवाज़ देना चाहता था। मुझे लोगों को बताना था कि मेरा समुदाय 'नाराज़ समुदाय' नहीं है। हम भी मनोरंजन करते हैं और ठहाके लगाते हैं। हंसी-मजाक जीवन का बेहद ज़रूरी हिस्सा है, यह इंसानी मिज़ाज का हिस्सा है। अल्लाह मेड मी फ़नी।''

साभार: अज़हर उस्मान

उस्मान जानते हैं कि हंसीमजाक और व्यंग्य-तानाकशी के बीच की विभाजक रेखा बहुत पतली है जिसकी अनदेखी के परिणाम गम्भीर हो सकते हैं। वह कहते हैं, ''मेरे लिए कॉमेडी गम्भीर होने का एक हंसोड़ तरीका है। मैं समाज के सकारात्मक मूल्यों या धार्मिक विश्वासों को चोट नहीं पहुंचाता, मेरा निशाना इंसानी ज़िंदगी है।'' अपने धार्मिक और जातीय समुदाय और उसके पूर्वाग्रहों की हंसीं उड़ाते हुए वह कभी उस अदृश्य सीमारेखा को नहीं लांघते जो हंसी को क्षोभ में बदल देती है।

स्टैंड-अप कॉमेडियन के तौर पर उस्मान के लिए अपने दर्शक-श्रोता वर्ग से जुड़ पाना और तुर्की-ब-तुर्की जवाब देना बहुत ज़रूरी है। इस मामले में यूथ क्लबों और विश्वविद्यालय परिसरों के कार्यक्रम उनके परीक्षण स्थल से होते हैं। नई दिल्ली के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी और अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में उनके कार्यक्रम ज़बर्दस्त सफल रहे।

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के कैनेडी हॉल में 3,000 दर्शकों के सामने खड़े उस्मान के लिए चुनौती सिर्फ उनका मनोरंजन करना ही नहीं, बीच-बीच में शोर मचाने वालों को काबू में रखना था। अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के पूर्व छात्र रहे उस्मान के पिता ने उन्हें बताया था कि यहां उनका सामना ज़रूर होगा और वह दर्शकों के इस वर्ग का दिल जीत कर ही सफल हो पाएंगे। उस्मान का दो घंटे का कार्यक्रम इस पैमाने पर पूरी तरह सफल रहा।

वह कहत हैं, ''मैं स्टेज पर एक बड़ा सा शीशा साथ लाता था और दर्शकों से कहता था कि अपना चेहरा इसमें देखो और जी भर कर हंसों क्योंकि चेहरा आपका, उसकी बनावट आपकी, आप उस पर हंसें तो किसी को क्या एतराज़ होगा भला? अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के छात्र शायद शीशे में अपने चेहरे देख रहे थे।''

उस्मान की फुलझड़ियां खुद उनके अपने भारीभरकम डीलडौल, लम्बे बालों, घनी दाढ़ी पर भी छूटती हैं। उनके प्रदर्शन का एक बहुत लोकप्रिय आइटम है हवाई अड्डे पर उनकी निगाह में आया एक संदिग्ध व्यक्ति जिसके हावभाव, डीलडौल, कपड़े-सूरत सब उसके संदिग्ध होने की चुगली कर रहे हैं- और फिर पता चलता है कि यह तो शीशे में दिखती खुद उन्हीं की परछाईं थी।

उस्मान स्पष्ट करते हैं कि कॉमेडी की भी कुछ सीमारेखाएं होनी ज़रूरी हैं, ''आप धर्म या आस्था का मज़ाक नहीं उड़ा सकते। इस मामले में मैं बहुत सावधान रहता हूं- मैं अपने दर्शक-श्रोता को चोट पहुंचाने के लिए मंच पर नहीं आया।''

उनकी बात की सच्चाई फोन पर बतियाती उस भारतीय आंटी की नकल से साबित होती है जिसका पूरा संवाद ''हां-जी हां-अच्छा-हां जी'' तक सीमित है। यह नकल इतनी दिल को छू लेने वाली है कि दर्शकों को लगता है कि वह अपनी ही किसी आंटी से मुखातिब हैं।

केनेडी हाल के निदेशक प्रोफ़ेसर अबुल कलाम क़ासिमी मानते हैं कि वह कुछ घबराए से थे कि ''इस अमेरिकन कॉमेडियन के चुटकलों पर छात्र भड़क न जाएं लेकिन वाकई अल्लाह ने इसे फ़नी ही बनाया है।''

अमेरिका में इलिनॉय में पले-बढ़े उस्मान की बचपन में ही कॉमेडी में रुचि हो गई थी, ''मैं जब अमेरिकन कॉमेडियन्स को रोज़मर्रा की जिंदगी से जुड़े लतीफे सुनाते देखता तो मुझे लगता कि किसी दक्षिण एशियन कॉमेडियन को भी हमारी खास दिक्कतों को यूं ही हंसते-हंसाते पेश करना चाहिए।''

वर्ष 2001 में उन्होंने अपने दो दोस्तों अफ्रीकी-अमेरिकी कॉमेडियन और लेखक प्रीचर मॉस और फिलिस्तीनी-अमेरिकी मो आमेर की मदद से अल्लाह मेड मी फनी- द ऑफ़िशियल मुस्लिम कॉमेडी टूर' की स्थापना करके अपनी चाहत पूरी कर ली । अमेरिकाभर में सफल प्रदर्शन करने के बाद उस्मान ने दक्षिण अफ्रीका, तुर्की, मिस्र, इंग्लैंड और पाकिस्तान में कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

अज़हर उस्मान कहते हैं, ''काश कि मैं रोज मंच पर आकर पूरी दुनिया को सच्चाई बता पाता।'' वह मानते हैं कि औसत इंसान राजा के सामने खड़े होकर उससे यह नहीं कह सकते कि तू नंगा है। यह सामाजिक ज़िम्मेदारी सिर्फ कॉमेडियन निभा सकते हैं।

तो क्या उस्मान यही ज़िम्मेदारी निभा रहे हैं, और उनका लक्ष्य लोगों का दिल बहलाना नहीं है? यही बात उस्मान ने जब अमेरिकन कॉमेडियन और नागरिक अधिकार आंदोलनकारी डिक ग्रेगरी से पूछी तो उनका जवाब था, ''हमें यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि मनोरंजन करने वाला कोई भी कलाकार अपनी कला से दुनिया को नहीं बदल सकता। वह दुनिया को सिर्फ शीशा दिखाता है। हां, हर कलाकार के अंदर हमेशा एक आंदोलनकारी बसता है।''

उस्मान कहते हैं कि अगर कोई कलाकार अपनी कला को गम्भीर कर्म मान ले तो उसके अंदर का आंदोलनकारी और सक्रिय हो जाएगा। उस्मान इस भ्रम को तोड़ना चाहते हैं कि मुसलमानों में हास्य बोध नहीं है। वह कहते हैं, ''मैं सिर्फ लतीफे सुनाने के लिए मंच पर खड़ा नहीं होता। इसके पीछे बहुत बडे इरादे हैं।''

ज़्यादा जानकारी के लिए:

अज़हर उस्मान

www.azhar.com

अमेरिका के सबसे मज़ाकिया मुस्लिम

http://www.americaabroadmedia.org/programs/view/id/28